>

Title: Regarding lower rank of India in Human Development Index list released by UN.

**श्री दत्ता मेघे (वर्धा):** महोदय, अभी कुछ माह पूर्व संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम की ओर से मानव विकास रिपोर्ट जारी हुई है। इस रिपोर्ट में 127 देशों की सूची जारी हुई है जिसमें भारत को 134वां स्थान मिला है। नोबल पुरस्कार विजेता अमर्त्य सेन का कहना सत्य है कि आर्थिक विकास का संबंध जरूरी नहीं कि मानवीय विकास से हो। इस रिपोर्ट में स्वास्थ्य, शिक्षा, लैंगिग विषमता, जीवन स्तर और पर्यावरण का आकलन किया गया है। आर्थिक विकास की दृष्टि से भले ही हम विश्व में आगे हैं किंतु मानव विकास सूचकांक से नेपाल और बांग्लादेश से पिछड़े हैं। मानव विकास रिपोर्ट में भारत को मध्यम और मिश्रित अर्थव्यवस्था में रखा गया है। हमारा प्रतिवर्ष मानव विकास सूचकांक गिर रहा है लेकिन हम इससे जरा भी चिंतित नहीं हैं। हम लगातार उन सभी वर्गों की उपेक्षा कर रहे हैं जो बुनियादी सुविधाओं से वंचित हैं। सरकार द्वारा चलाई जा रही कल्याणकारी योजनाओं में व्याप्त भ्रÂष्टाचार के कारण इन योजनाओं का लाभ किसी को नहीं मिल रहा है। यह भी एक विडंबना है कि एक तरफ हम विश्व की महाशक्ति बनने जा रहे हैं और दूसरी तरफ कुपोषण, भुखमरी और नवजात शिशुओं की मृत्यु के कारण विश्व में नीचा देखना पड़ रहा है। देश की खाद्यान्न वितरण प्रणाली का केवल 60 फीसदी बीपीएल परिवारों को लाभ मिल रहा है। समाचार पत्र, टेलीविजन और संसद में भी यह मामला कई बार आया है लेकिन इसका परिणाम कुछ भी नहीं होता है। भारत में 25 लाख शिशुओं की हर वर्ष मृत्यु होती है। विदर्भ में लगभग 70 फीसदी बच्चे कुपोषण से पीड़ित हैं। हमारी स्थिति दक्षिण एशिया और अफ्रीका के गरीब देशों से भी बदतर है इसलिए जल्द से जल्द मानवीय विकास के लिए समाज के सभी वर्गों को आर्थिक विकास का लाभ मिलना चाहिए।